ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यद्यद्यामि तदा भर। अथर्ववेद 20/118/2

हे प्रभो! जो-जो मैं मांगू वह-वह मुझे प्रदान कर।

O God ! shower your blessing on me.

वर्ष 37, अंक 11 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 27 जनवरी, 2014 से रविवार 2 फरवरी, 2014
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.orgèaryasandesh

कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के अध्यक्ष आचार्य एम. आर. राजेश के नेतृत्व में 19 जनवरी को हुई

केरल के कालीकट में वैदिक क्रान्ति : 1500 याज्ञिकों ने सस्वर यज्ञ करके बनाया रिकार्ड

भारत के ही नहीं अपितु खाड़ी देशों के दैनिक समाचार पत्रों ने भी प्राथमिकता से छापी खबर

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा आयोजित स्थापना दिवस समारोह में कार्यक्रम की सीडी को प्रदर्शित किया जाएगा

13 -19 फरवरी को होगा वृहद् सोमयाग का आयोजन : स्वामी रामदेव जी करेंगे उद्घाटन

समापन समारोह 19 फरवरी 2014 को महाशय धर्मपाल जी होंगे मुख्य अतिथि

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

7वाँ आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन

रविवार	स्थान	समय
2 फरवरी, 2014	आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी, नई दिल्ली-18	प्रातः 10 बजे से

पंजीकरण कराने वाले सभी प्रतिभागी माता-पिता के साथ पहुंचकर आर्यपरिवारों को जोड़ने में सहयोगी बनें

विशेष नोट : सम्मेलन स्थल पर भी तत्काल पंजीकरण की व्यवस्था होगी। तत्काल पंजीकरण वालों के नाम बाद में विवरणी पुस्तिका में सम्मिलित हो सकेंगे।

निवदेक :	विनय आर्य	गोविन्दलाल नागपाल	अर्जुनदेव चड्ढा	ओ. पी. घई	बलदेव सचदेवा
	महामन्त्री	संयोजक (दिल्ली)	राष्ट्रीय संयोजक	प्रधान, आ.स.वि.पु.	मन्त्री आ.स. वि.पु.

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला- 2014 के अवसर पर प्रगति मैदान में होगा

वृहद् स्तर पर वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार

शनिवार , 15 फरवरी से रविवार, 23 फरवरी 2013 तक

हॉल नं. 18 स्टाल नं. 119-124 (हिन्दी)

हॉल नं. 10 स्टाल नं. 27 (अंग्रेजी)

सबकी सूचना पृष्ठ 8 पर

आर्यजन ईमेल, एस.एम.एस.,फेस बुक, ट्वीटर आदि के माध्यम से स्टाल नं. की सूचना पहुंचाकर जन-साधारण को आमन्त्रित करने में सहयोगी बनें

वेद-स्वाध्याय

मन्त्रहीन यज्ञ निष्फल

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

अव नो वृजिना शिशीह्यृचा वनेमानृचः। नाब्रह्मा यज्ञ ऋधग्जोषति त्वे।।ऋग्वेद 10/105/8

अर्थ—हे परमात्मन्! **(नः)** हमारे **(वृजिना)** छोड़ने योग्य पापों को **(शिशीहि)** क्षीण कीजिये। हम **(ऋचा)** मन्त्रों के उपदेश से **(अनृचः)** जो वेद से अनभिज्ञ हैं, उन्हें सम्पर्क में लायें। क्योंकि **(अब्रह्मा यज्ञः)** बिना ब्रह्मा वाला अथवा बिना वेदमन्त्र के किया यज्ञ **(त्वे)** तु ो **(ऋधक् जोषति)** तनिक भी पसन्द नहीं आता।

इस मन्त्र में बहुत महत्त्वपूर्ण विषय को कहा है। तद्यथा १. वेदज्ञान से वञ्चित लोगों में वेद का प्रचार करना, २. बिना ब्रह्म, मन्त्र के यज्ञ निष्फल, ३. वेदमन्त्रों में दिये उपदेश के अनुसार कर्म करना। इन पर क्रमशः विचार किया जायेगा।

१. **वेद प्रचार**—निरुक्त में कहा है **पुरुषविद्यानित्यत्वात् कर्मसम्पतिर्मन्त्रो वेदे** (नि० १.२.७) पुरुष की विद्या अनित्य है इसलिये उसके कर्त्तव्य कर्मों का ज्ञान मन्त्रों द्वारा बतलाया है। यज्ञादि में इसीलिये मन्त्रों का उच्चारण किया जाता है कि जिससे वेदोक्त यज्ञादि कर्म विधि-विधान से किये जा सकें। वेद परमात्मा की वाणी है और उसके प्रचार-प्रसार के लिये अपना जीवन, शक्ति, सामर्थ्य, मित्र, पुत्रादि और धन इन सबको उपयोग लेना चाहिये (अथर्व० १९.७९.१) वेद का प्रचार इसलिये करना आवश्यक है कि वह सर्वज्ञानमय है। सब सत्य-विद्याओं का पुस्तक है और धर्म का मूल है। वेद पढ़ने से ब्राह्मण शरीर बनाया जाता है। जो द्विज वेद न पढ़ कर अन्यत्र श्रम करता है वह अपने जीवन काल में पुत्र-पौत्रों सहित शूद्रभाव को प्राप्त हो जाता है जो माता-पिता अपने बच्चों को वेद के स्थान पर धन-सम्पत्ति और सुखोपभोग के लिये दूसरी विद्यायें पढ़वाते हैं, उनके बालकों का आचार-विचार भ्रष्ट हो जाता है और भेड़िये के समान **वत्सांश्च घातुको वृकः** बालकों का हत्यारा है (अथर्व० १२.४.७)। जो इन पवित्र ऋचाओं का मनन करता है, उसे ज्ञानदायिनी वेदवाणी सभी सुख सामग्री प्रदान करती है। (ऋ० ९.६७.३२)

जब तक वेद का प्रचार रहा तब तक सारे विश्व में सुख-शान्ति का साम्राज्य और सभी प्रकार की उन्नति होती रही।

२. **बिना मन्त्र के यज्ञ निष्फल**—निरुक्त का उदाहरण देकर यह अभी कहा गया कि पुरुष की विद्या अनित्य है इसलिये मन्त्रों के अनुसार यज्ञादि कर्म करने चाहियें। सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में कहा है—'मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने के लाभ विदित हो जायें और मन्त्रों की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहे। वेद-पुस्तकों का पठन-पाठन और रक्षा भी होवे।' यज्ञ में मन्त्र बोलने का एक और मन्त्र इसकी पुष्टि करता है—

उपप्रयन्तोऽअध्वरमं मन्त्रं वोचेमाग्नये। आरेऽस्मे च शृण्वते।।यजुः० ३.११॥

यज्ञ के समीप जाते हुये हम दूर से भी हमें सुनने वाले भगवान् के प्रति मन्त्र बोलें। गीता कहती है—

विधिहीन मसृष्टान्नं मन्त्रहीनम दक्षिणम्। श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते॥ गीता १७.१३॥

शास्त्रविधि से हीन, अन्नदान से रहित, मन्त्रोच्चारण से रहित, बिना दक्षिणा और श्रद्धा-रहित मन से किया गया यज्ञ 'तामस यज्ञ' कहलाता है। मन्त्रों का उच्चारण इसलिये भी किया जाता है कि यज्ञ में दी गई आहुति भली-भाँति जल जाये। यदि बिना मन्त्र बोले या शीघ्रता से मन्त्र बोलकर आहुति दी जायेगी तो उसका ज्वलन सम्यक् रूप में नहीं होगा और वातावरण में धुआँ फैल जायेगा।

कुछ लोग तुलसीदास रामायण की चौपाई पढ़कर आहुति देते हैं और तान्त्रिक लोग वेद मन्त्रों के स्थान पर तन्त्र ग्रन्थों में कहे मिथ्या-मन्त्रों से यज्ञ करते हैं, यह अवैदिक कार्य है। वेद के मन्त्रों में संक्षिप्त रूप में जो अर्थ सन्निहित हैं वे यज्ञ के कार्य की स्पष्ट व्याख्या भी कर देते हैं और उनके स्वरसहित उच्चारण करने से ध्वनि-तरंगों की उत्पत्ति होने के कारण वातावरण में परिवर्तन आता है। इस स्वर लहरी का व्यक्ति पर भी प्रभाव पड़ता है। इसलिये यज्ञ कार्य मन्त्रोच्चारण करते हुये ही करना उचित है।

३. वेद मन्त्रों में दिये उपदेश के अनुसार कर्म करने का आदेश इस मन्त्र में दिया है। **अव नो वृजिना शिशीहि** हे परमात्मन्! हमारे पापों को क्षीण कीजिये। जैसे वस्त्र पर लगे मैल को साबुन से उतारते हैं वैसे ही हम ऋचा अर्थात् वेदोक्त कर्मों का अनुष्ठान करते हुये **अनृच** जो वेद से विपरीत पापकर्मों में लगे हुये हैं, उन्हें वेदमन्त्रों के द्वारा उपदिष्ट कर्मों को कराने के लिये प्रेरित करें। हमने भी जो वेद की आज्ञा न मान कर जो पापकर्म किये हैं उनका भार भी वेदोक्त कर्मों से कुछ कम हो जायेगा। वेदोक्त कर्म कैसे हैं इसका कुछ दिग्दर्शन निम्न मन्त्र में किया गया है—

नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मन्त्रश्रुत्यं चरामसि। पक्षेभिरपिकक्षेभिरत्राभि संरभामहे।।

ऋ० १०.१३४.७

हे दिव्यगुण-सम्पन्न विद्वज्जनो! न तो हम हिंसा करते हैं और न ही फूट डालते हैं अपितु जैसा वेदमन्त्रों में कहा है वैसा ही आचरण करते हैं। तथा आगे-पीछे और पार्श्वभाग में रहने वाले सभी को साथ लेकर इस जगत् में कार्य करते हैं।

वेदों में हिंसा के स्थान पर **पुमान् पुमान्सं परिपातु विश्वतः** मानव सभी ओर से दूसरे मनुष्यों की रक्षा करे, इसका पालन करना, मन्त्रों में कहे कर्त्तव्य कर्मों का आचरण और अकर्त्तव्यों का परित्याग तथा सभी से मिलकर कार्य करने का प्रयत्न आदि उपदेश देकर कितनी उदात्त भावना का परिचय दिया है यह पाठक बन्धु स्वयं ही अनुमान कर सकते हैं।

वेद सृष्टि का आदि-संविधान है जिसका उपदेश मानवमात्र के लिये दिया गया है। इसमें किसी देश, जाति या वर्ग विशेष के लिये दिशानिर्देश नहीं दिया गया है। वेद सार्वभौम धर्मग्रन्थ हैं। अन्य धर्मग्रन्थों में जो कुछ अच्छी बाते हैं वे वेद से ही ली गई हैं। उनके मानने में किसी का भी विरोध नहीं है। विरोध का स्थान परस्पर मतभेद, अपने मत को श्रेष्ठ मान दूसरों से घृणा-द्वेषादि करना है। यदि सारा संसार वेद का अनुयायी बन जाये तो फिर सुख-शान्ति स्थापित होने में देर न लगेगी।

- *क्रमशः*

विश्व हिन्दी सचिवालय द्वारा डॉ. कविता वाचक्नवी के दोहों को श्रेष्ठ कविता का सम्मान

भारतीय जीवन मूल्यों के प्रचार-प्रसार की संस्था 'विश्वम्भरा' की संस्थापक-महासचिव एवं वरिष्ठ कवयित्री डॉ. कविता वाचक्नवी को 'विश्व हिंदी सचिवालय' (World Hindi Secretariat) (भारत सरकार व मॉरीशस सरकार का संयुक्त उपक्रम) द्वारा विश्व हिंदी दिवस-2014 के उपलक्ष्य में अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी कविता प्रतियोगिता में (भौगोलिक क्षेत्र यूरोप के अंतर्गत) सर्वश्रेष्ठ सम्मान प्रदान किया गया है। 'विश्वम्भरा' द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में यह जानकारी दी गई है कि वर्तमान में लंदन (ब्रिटेन) में रहकर हिन्दी में स्वतंत्र लेखन और भारतीय संस्कृति के लिए काम कर रहीं तथा केम्ब्रिज विश्वविद्यालय (ब्रिटेन) में हिन्दी की अन्तर्राष्ट्रीय परीक्षाओं की परीक्षक डॉ. कविता वाचक्नवी को यह पुरस्कार उनकी रचना 'राष्ट्रीय दोहे' पर दिया जा रहा है। विश्व हिंदी सचिवालय की घोषणा के अनुसार इस अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार के अंतर्गत उन्हें 300 डॉलर की सम्मान राशि और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा।

ध्यातव्य है कि कविता वाचक्नवी प्रसिद्ध आर्य विद्वान पंडित इन्द्रजित देव (यमुना नगर) की सुपुत्री तथा विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक और वैदिक विद्वान उन डॉ हरिश्चंद्र की पत्नी हैं, जिन्होने विदेशी विश्वविद्यालय में अपनी प्रोफेसरशिप सहित अपना व परिवार का सर्वस्व वेद प्रचार में लगा कर वैदिक प्रचारक के रूप में स्वयं को 1998 से समर्पित कर दिया है। आर्यसमाज के इतिहास में वे एकमात्र व्यक्ति हैं जो वेद और दर्शनों की शिक्षाओं को विदेशी गोरे लोगों में लेकर गए हैं। ब्रिटेन के विभिन विश्वविद्यालयों में व स्थान-स्थान पर उनकी नियमित ध्यान और वैदिक-ज्ञान-विज्ञान की अभूतपूर्व कक्षाएँ चलती हैं। डॉ. हरिश्चंद्र द्वारा वेदादि विषयों पर 6-8 पुस्तकें अंग्रेजी में लिखी गई हैं जो देश-विदेश व नई पीढ़ी में अत्यंत लोकप्रिय हुई हैं। महर्षि के संदेश को विदेशियों व गोरों में पहुँचाने हेतु इस युगल द्वारा इंग्लैण्ड में अपने पिता की इच्छा को प्रधानता देते हुए एक रजिस्टर्ड चौरिटी संस्था सेंटर फॉर इनर साईसेज भी संचालित स्थापित की गई है। यह संस्था आर्यसमाज के ऋषि प्रणीत दस नियमों को विधिवत् अपना लक्ष्य बनाकर पूरी तरह अंग्रेजी में व विदेशियों के मध्य कार्य करती है।

गत वर्ष जुलाई में डॉ. कविता वाचक्नवी की एक कविता को दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा अपने अनिवार्य हिन्दी के आधार पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया व भारतीय उच्चायोग, लन्दन ने उन्हें ब्रिटेन में सर्वश्रेष्ठ पत्रकारिता हेतु 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार' से अलंकृत किया था। इनकी कविताएँ केंद्र सरकार (NCERT) व अन्य कई राज्यों के विद्यालयीय पाठ्यक्रमों में भी वर्ष 2002 से सम्मिलित की जा चुकी हैं।

सचिवालय द्वारा पुरस्कृत राष्ट्रीय दोहे

शीश सजा हिम का मुकुट, धोय समंदर पाँव।
ऐसी भारत माँ बसे, सुन्दर मेरे गाँव।।1।।

वर्षा भारी असम में, सूखा राजस्थान।
पर सोना उपजा रहे, मिल मजदूर किसान।।2।।

प्राण पुष्प से पूजते, हो जाते बलिदान।
सीमा पर हुंकारते, सिंह समान जवान ।।3।।

रंग-रंग के लोग हैं, रंग रंग के फूल।
मेरे प्यारे देश में रंग-रंग की धूल।।4।।

भाषा चाहे अलग हैं, अलग नहीं हैं भाव।
एक नदी में तैरतीं, तरह-तरह की नाव।।5।।

अपने सब त्यौहार हैं, अपने हैं सब खेल।
तोड़े से न टूटता, अपना ऐसा मेल।।6।।

अपना यह परिवार है, अपने हैं सब लोग।
साथ सभी मिलकर सहें, दुःख, आपद औ' रोग।।7।।

ज्योतिर्मय जग को किया, दिया वेद का ज्ञान।
विश्ववंद्य भारत रहा, संस्कृति सूर्य समान।।8।।

अस्त्र-शस्त्र की होड़ में पगलाया संसार।
सत्य, अहिंसा, प्रेम हैं भारतीय उपचार।।9।।

सुख का मूल धर्म है

महर्षि मेघातिथि अक्षपद एवं महर्षि पतंजलि का मन्तव्य है- ''**प्रयोजनमनुद्दीश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते**'' अर्थात् बिना प्रयोजन के मन्दबुद्धिवाला भी चेष्टा नहीं करता है। अभिप्राय है पागल व्यक्ति भी चेष्टा विशेष करता है तो उसका भी कोई उद्देश्य, प्रयोजन होता है, भरसक हमें उसे न समझें। तो बुद्धिमान् मनुष्य व्यापारी व्यापार करता है, दुकानदार दुकानदारी करता है, चिकित्सक चिकित्सा, आविष्कारक आविष्कार, उपदेशक-उपदेश, अध्यापक अध्यापन, अध्येता-अध्ययन, वकील-वकालत, प्रशासक-प्रशासन आदि करता है, यह निष्प्रयोजन नहीं सप्रयोजन ही करता है।

यदि हम चिन्तन-मनन करें तो यह समझ में आता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी बुद्धि, योग्यता, क्षमता-दक्षतापूर्वक अपनी रुचि के अनुसार प्रातः जागरण से रात्रिशयन एवं रात्रिशयन से प्रातः जागरण तक मनुष्य की सारी चेष्टाएं एवं क्रियाकलाप एक विशेष उद्देश्य ही से होता है, निष्प्रयोजन नहीं। तो मनुष्यादि इन प्राणियों की चेष्टाओं का प्रयोजन क्या है? चिन्तको, मनीषियों के अनुसार सबकी इच्छा, रुचि, प्रयोजन-लक्ष्य सुख की प्राप्ति एवं दुःखों की निवृत्ति ही है, एतदर्थ ही सम्पूर्ण कार्यकलाप होते हैं एवं अहर्निश परिश्रम होता है। क्या कोई ऐसा प्राणी है जो दुःख ही चाहता हो सुख नहीं? ऐसा नही मिलेगा। मनीषियों ने अनेकों उपाय बताए हैं। आचार्य चाणक्य के अनुसार ''**सुखस्य मूलं धर्मः**'' सुख का मूल-आधार धर्म है। धर्म वेदप्रतिपादित कर्त्तव्यों का अनुष्ठान करना कहलाता है। सद्गुणों को धारण करना कहलाता है। मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण इस प्रकार से बताए हैं-

धृति-क्षमा-दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधों दशकं धर्मलक्षणम्।।

1. धैर्य रखना, 2. सहनशील होना, 3. मनो-नियन्त्रण रखना, 4. मनसा-वाचा-कायेन चोरी न करना, 5. स्वच्छता आन्तरिक एवं बाह्य बनाए रखना, 6. इन्द्रियों को नियन्त्रित रखना, 7. विद्यायुक्त होना, 8. बुद्धिपूर्वक कार्य करना, 9. मनसा-वाचा-कायेन जैसा-देखा-सुना-जाना-अनुभव आदि किया हो, यथायोग्य व्यवहार करना, 10. क्रोध न करना किन्तु प्रीतिपूर्वक व्यवहार करना ये धर्म के लक्षण कहलाते हैं। इनका लौकिक एवं आध्यात्मिक व्यावहारिक जीवन में विशेष महत्त्व है।

श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।

वेद, वेदानुसार प्रणीत स्मृतिशास्त्र, सज्जनों का आचरण एवं अपनी आत्मा की अनुकूलता-आत्मवत् व्यवहार धर्म के साक्षात् लक्षण कहलाते हैं।

महर्षि वेदव्यास कहते हैं-

श्रूयतों धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवाव धार्यताम।आत्मनः प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत्।।''

अष्टादश पुराणेषु कस्यचिद् वचनद्वयम्। परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

परोपकार पुण्यार्थ एवं परपीडा पापार्थ होता है। पुण्य का फल धर्म-सुख है एवं पाप-अधर्म अर्थात् दुःख होता है।

धर्म के विषय में आचार संहिता-मानव धर्मशास्त्र मनुस्मृति प्रसिद्ध ही है। विस्तार पूर्वक धर्म का प्रतिपादन इस ग्रन्थ में वेदानुकूल प्रतिपादित है। दर्शन-उपनिषद्, वेद, आरण्यकादि ग्रन्थों में भी सविस्तार प्रतिपादन है। वैशेषिक दर्शनकार महर्षि कणाद की प्रतिज्ञा ही है- **अथातो धर्म व्याख्यास्याम्।** शिष्यों की जिज्ञासा-धर्म क्या है?

समाधान - **यतोऽभ्भुदय निःश्रेयस सिद्धिः सः धर्मः।** जिससे लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति हो वह धर्म है।

शंका - शिष्य क्या यह आपका मन्तव्य है। नहीं। **तद्वचनाद् आम्नायस्य प्रामाण्यम्** (वै. 1/1/1-3)

वेद ईश्वर का वचन होने से वह प्रामाणिक है, वेद जिन कर्मों का विधान-प्रतिपादन करता है वह धर्म कहलाता है। वेदानुकूल सम्पूर्ण मानव-जीवन-व्यवहार, क्रियाकलाप धर्मान्तर्गत है। धर्म का पालन करने वाला दुःखी हो नहीं सकता। वह दुःखी दीख सकता है, प्रताड़ित हो सकता है, कष्टमय जीवनयुक्त दीख सकता है, किन्तु सचमुच वह दुःखी नहीं हो सकता, वह लौकिक प्राणियों द्वारा उपहास का पात्र बन सकता है किन्तु धार्मिक का जीवन उज्ज्वल एवं आनन्दमय होता है, क्योंकि प्रत्येक अच्छाई, धर्म-तलवार-अंगारें पर चलने की तरह कठिन होता है, सन्मार्ग पर चलने में बाधाएं-कठिनाइयाँ आती ही है। किन्तु हमें संघर्षशील होकर मंजिल की ओर बढ़ना है।

बाधाएं कब बांध सकी हैं,
आगे बढ़ने वालों को।
विपदाएं कब रोक सकी हैं,
मरकर जीने वालों को।

वृक्ष कट-कट-कर बढ़ा है,
दीप बूझ-बूझकर जला है।
अगर मृत्यु से जीवन मिले
तो उसकी आरती उतारो।।

प्रत्येक क्षण व्यक्ति जीवन-मरण से जुड़ा रहता है, जो धार्मिक है वह जीवन है अन्यथा तो मृत्यु ही है।

संघर्षों का सामना करते हुए सन्मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिए। मुसीबतों से घबराना नहीं चाहिए।

दुःख आता है, सुख देने को
मनः मूर्ख! क्यों घबराता है।
जब जोर की गर्मी पड़ती है,
तब बादल जल बरसाता है।

किन्तु मनुष्य की नासमझी है कि वह सुख की घड़ी में ईश्वर को भूल जाता है, दुःख ही में पुकारता है। जबकि मनुष्य को तटस्थ रहना चाहिए-

दुःख में सिमरन सब करे,
सुख में करे न कोय।
जो सुख में सिमरन करे,
तो दुःख काहे को होय।।

प्रत्येक अवस्था में व्यक्ति ईश्वर स्मरणपूर्वक धर्म का अनुपालन करे। क्योंकि चाणक्य एवं भर्तृहरि के अनुसार धर्म ही मनुष्य को पशुओं से भिन्न सिद्ध करता है-

''**आहार-निद्रा-भय-मैथुनं च,**
सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हितेषाम् अधिको विशेषः,
धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।।''

अर्थात् आहार=खाना-पीना, निद्रा=शयन करना, भय=बलवान् से डरना-निर्बल को डराना, और मैथुन=सन्तान आदि उत्पन्न करना। उपर्युक्त चार कार्य मनुष्य भी करता है और पशु भी करते हैं। तो मनुष्य एवं पशु में विशेष अन्तर क्या है **'पश्यति इति पशुः''** तब सार्थक होगा जब मनुष्य बुद्धिपूर्वक देखे, कार्य करे, **आमननात्-मत्वा कर्माणि सीव्यति** -मनन पूर्वक, बुद्धिपूर्वक, सोच-विचार कर कार्य करना मानवता-मनुष्यता है अन्यथा तो पशुता ही है।

कवि ने कहा है कि-

धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः, धर्मो हि तेषांम् अधिको विशेषः।

अर्थात् धर्म ही मनुष्य को पशुओं से भिन्नता दर्शाता है, अन्यथा तो धर्मरहित व्यक्ति पशु ही है, आहार निद्रा-भय एवं मैथुनादि समानताओं से।

तो मनुष्य को केवल भौतिक-लौकिक ही नहीं रहना है-अभ्युदय के साथ निःश्रेयस की ओर बढ़ना है, प्रेय से श्रेय की ओर, इहलोक से परलोक की ओर असत्य से सत्य की ओर, दुराचार से सदाचार की ओर और अधर्म से हटकर धर्म की ओर बढ़ने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। आचार्य चाणक्य का यह चिन्तन-सूत्र **'सुखस्थ मूलं धर्मः'** यही संदेश देता है।

निन्दन्तु नीति निपुणा यदि वा स्तुवनतु, लक्ष्मीः समा विशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

- दीप नारायण शास्त्री

बिना प्रयोजन के मन्दबुद्धिवाला भी चेष्टा नहीं करता है। अभिप्राय है पागल व्यक्ति भी चेष्टा विशेष करता है तो उसका भी कोई उद्देश्य, प्रयोजन होता है, भरसक हमें उसे न समझें। तो बुद्धिमान् मनुष्य व्यापारी व्यापार करता है, दुकानदार दुकानदारी करता है, चिकित्सक चिकित्सा, आविष्कारक आविष्कार, उपदेशक-उपदेश, अध्यापक अध्यापन, अध्येता-अध्ययन, वकील-वकालत, प्रशासक-प्रशासन आदि करता है, यह निष्प्रयोजन नहीं सप्रयोजन ही करता है।

यदि हम चिन्तन-मनन करें तो यह समझ में आता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी बुद्धि, योग्यता, क्षमता-दक्षतापूर्वक अपनी रुचि के अनुसार प्रातः जागरण से रात्रिशयन एवं रात्रिशयन से प्रातः जागरण तक मनुष्य की सारी चेष्टाएं एवं क्रियाकलाप एक विशेष उद्देश्य ही से होता है, निष्प्रयोजन नहीं। तो मनुष्यादि इन प्राणियों की चेष्टाओं का प्रयोजन क्या है?

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

उत्साह, संकल्प और धूमधाम से मनाएँ ऋषि-पर्व

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव को ऋषि पर्व के रूप में मनाएं आर्यजन - आचार्य बलदेव

इन विशेष अवसरों पर वेद और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के निमित्त कुछ विशेष सुझाव

भारतीय ऋतुचक्र में फाल्गुन मास जहां बसन्त ऋतु का आगमन होता है। चारों ओर जोश, उमंग, हरियाली होती है, जहां चारो ओर फूलों की महक से विश्व महकने लगता है। इसी मास में जहां बसन्त पंचमी को धर्मवीर हकीकतराय का बलिदान दिवस मनाया जाता है वहीं फाल्गुन दशमी को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव और इसी मास में ही महाशिवरात्रि का पर्व और इसी पर्व से बालक मूलशंकर के मन-मस्तिष्क में में प्रज्ज्वलित हुई जिज्ञासा-बोध की लौ। जिसने हमें इस दिवस का बोध दिवस के रूप में मनाने को उत्साहित किया। महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव से बोधोत्सव तक का समय ऋषि पर्व के रूप में आयोजित किया जाता है। इस पर्व को इस प्रकार आयोजित करें कि आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अधिक उपयोगी हो सके-

1-महर्षि दयानन्द की जयन्ती अर्थात् ऋषि-पर्व पर यज्ञों और वेद प्रचार का विशेष आयोजन होना चाहिए। प्रत्येक आर्य महानुभाव को चाहिए कि वे अपने मुहल्ले में घर-घर जाकर विशेष यज्ञ का आयोजन करें लिए ही नहीं बल्कि आदर्श समाज, संस्कृति चेतना और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के निमित्त भी करें। दैनिक पत्रों और पत्रिकाओं में विज्ञापन बड़े पैमाने पर देने का अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दें।

4- महर्षि दयानन्द का चित्र, लघु जीवनी और वेद सम्बन्धी साहित्य का वितरण के लिए भी तैयारी करें। अपने क्षेत्र के अधिकाधिक लोगों को प्रेरित करके इसमें सम्मिलित करें।

5-प्रभातफेरी और शोभायात्रा का वृहद स्तर पर आयोजन करें।

6-समाज के असहाय, निर्बल, रोगी और उपेक्षित लोगों के लिए ऋषि लंगर का आयोजन करें, अपने घर, परिवार, आस-पास के लोगों को मिठाइयां बांटें। आर्यसमाजें क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डॉक्टर, वकील, इन्जीनियर इत्यादि तथा विशेष रूप से छात्र वर्ग को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघु साहित्य वितरित करें। **इस हेतु सभा से 'एक निमन्त्रण', आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र' एवं 'लघु (बाल) सत्यार्थ प्रकाश' उपलब्ध है। आप इन्हें क्रय करके वितरित कर सकते हैं।**

7- स्थानीय स्तर पर निकलने वाले पत्र-पत्रिकाओं में लेखादि और विज्ञापन देकर प्रत्येक आर्य महानुभाव अपने कर्त्तव्य का सम्यक् पालन करते हुए आर्यत्व का परिचय दे सकते हैं।

8-आर्य समाज के स्वर्णिम इतिहास पर कार्यशालाएँ, शिविर और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी प्रत्येक दृष्टि से उत्तम होगा।

9- जनहित में परोपकार एवं सेवा वाले कार्यों जैसे चिकित्सा शिविर, सामूहिक विवाह, रक्तदान शिविर और चिकित्सकीय जाँच शिविर का आयोजन जैसे अनेक सेवाभावी कार्य इस विशेष अवसर पर किए जाने चाहिए।

10-आर्यजनों को इस दिन स्वेच्छिक अवकाश अवश्य लेना चाहिए।

11-महर्षि दयानन्द के जन्मदिन की बधाई 'ऋषि-पर्व' की शुभकामनाएँ' के रूप में अवश्य प्रत्येक आर्य महानुभाव को अपने सभी शुभचिन्तकों को भेजनी चाहिए।

12-वैदिक मिशनरियों को अपने आयोजनों में सम्मानित करें और आर्य समाज में नई पीढ़ी को आकर्षित करने के लिए कुछ इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करें, जिससे उन्हें आर्य समाज और ऋषि के सम्बन्ध में सही जानकारी मिल सके। - **विनय आर्य, महामन्त्री**

हम सभी आर्य महानुभाव अपने स्तर पर महर्षि दयानन्द के जन्मदिन को 'ऋषि-पर्व' के रूप में मनाते आ रहे हैं। प्रत्येक वर्ष हम इसे दुगने और चौगुने उत्साह और संकल्प के साथ मनाते रहे हैं। ज्ञातव्य है आर्य समाज, ऋषि के कृतित्व व व्यक्तित्व को जनमानस तक पहुँचाने का यह विशेष अवसर होता है। इस वर्ष महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव 24 फरवरी एवं बोधोत्सव 27 फरवरी, 2014 को है। सभी आर्यजनों को चाहिए कि जन्मोत्सव पर ऐसे कार्यक्रम आयोजित करें जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से उपयोगी हो।

ही साथ ही महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के सम्बन्ध में विशेष जानकारी देने का कार्यक्रम आयोजित करें। उपदेशकों के उपदेश और आर्ष साहित्य का वितरण करें, जिससे जनमानस को ऋषि के व्यक्तित्व और कृतित्व की ठीक-ठीक जानकारी हो सके।

2-प्रत्येक आर्य महानुभाव और आर्य संस्थाओं को चाहिए कि वे अपने शुभ निवास स्थान पर 'ओ३म् ध्वज' फहराएँ और ऐसे आयोजन भी करें, जिसमें जनमानस की भागीदारी हो।

3-नई पीढ़ी और बच्चों को वैदिक धर्म, आर्य समाज और महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित साहित्य का वितरण कर उन्हें प्रेरणा देने के लिए प्रत्येक आर्य समाज को संकल्प के साथ आगे आना चाहिए। 'बाल मेले' और 'बाल प्रतियोगिताओं' का भी विशेष आयोजन किया जा सकता है।

4-महर्षि के जीवन का मुख्य लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' और उनके आदर्श समाज और संस्कृति निर्माण के लक्ष्य का ध्यान रखते हुए ऐसे कार्यक्रम बनाए जाने चाहिए जो जन साधारण पर प्रभाव डालने वाले हों। मीडिया का अधिकाधिक प्रयोग ऋषि-पर्व को स्मरण दिलाने के

।। ओ३म्।।
गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कांगड़ी फार्मेसी
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
आपकी अपनी फार्मेसी
प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल चाय, पायोकिल मंजन, च्यवनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राह्मी रसायन, आंवला रस, आंवला कैंडी, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ठ, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ठ, सफेद सुरमा, गुलकन्द, महाभृंगराज तैल
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983 (व्यावसायाध्यक्ष)

गदर शताब्दी सचित्र-स्मारिका लोकार्पण समारोह सम्पन्न

देशभक्तों का चरित्र पाठ्यक्रम में सम्मिलित हों- सुभाष टोपे

1857 के प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन से लेकर आज तक देश पर कुर्बान होने वाले शूरवीरों की गाथा विद्यार्थियों के नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम में पढ़ाई जानी चाहिए। आत्म बलिदान देकर राष्ट्र का गौरव बढ़ाने वाले सदैव अमर रहेंगे। ये उद्‌गार महान योद्धा तात्या टोपे के प्रपौत्र सुभाष टोपे ने ''गदर शताब्दी सचित्र-स्मारिका लोकार्पण समारोह'' नेता जी सुभाष प्लेस आक्यूपेंटस एसोसिएशन एवं शहीद स्मृति चेतना समिति के संयुक्त कार्यक्रम में कहे। श्री टोपे ने भारत सरकार से पाठ्यक्रम में देशभक्त के चरित्र शामिल करने तथा उनके ऐतिहासिक स्थलों को राष्ट्रीय स्मारक'' घोषित करने की भी मांग की। युवा पीढ़ी को संस्कारित किये बिना राष्ट्र का सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं।

महामंत्री प्रेम कुमार शुक्ल ने बताया गदर संघर्ष शताब्दी में लाला लाजपत राय, लाला हरदयाल, करतार सिंह सराबा, सोहन सिंह भक्ना, भाई परमानंद जैसे सैंकड़ों क्रांतिवीरों की बलिदान गाथा से परिचित कराने के लिए जागरूकता अभियान चलाया जायेगा।

गदर शताब्दी स्मारिका का लोकार्पण करते अमर शहीद तात्या टोपे के प्रपौत्र श्री सुभाष टोपे साथ में हैं सर्वश्री रविचन्द्र गुप्ता, रामनिवास गुप्ता, जयभगवान अग्रवाल, चौधरी चन्द्रभान, श्रीमती शोभा रानी एवं अन्य अतिथिगण।

समाजसेवी रामनिवास गुप्ता ने साहित्यकार रवि चन्द्र गुप्ता व पत्रकार चन्द्रमोहन आर्य रचित ''गदर शताब्दी सचित्र स्मारिका'' का लोकार्पण किया।

इस अवसर पर सत्येन्द्र जैन, स्वास्थ्य मंत्री, विधायक नंद किशोर गर्ग, सुरेश गुप्ता , नवीन गोयल, हर्ष गर्ग, प्रमोद कपूर, राजेन्द्र राजा, दीपक गोयल, महेश चन्द्र शर्मा, शोभा रानी ने भी नेता जी सुभाष चन्द्र बोस, व तात्या टोपे के 200वें जन्मोत्सव पर प्रेरक विचार रखे। सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा गुमनाम शहीद बाल प्रदर्शनी देवीदत सजल ने लगाई।

- चन्द्रमोहन आर्य-प्रेस सचिव

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ थांदला आश्रम तथा बामनिया में निर्माणाधीन महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन बामनिया का निरीक्षण

मध्य प्र. के थादंला आश्रम एवं बामनिया में निर्माणाधीन विद्यालय का निरीक्षण करते सर्वश्री विनय आर्य, इं. नरेन्द्र नारंग, जोगेन्द्र खट्‌टर, मनोज गुलाटी एवं अन्य

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून के उत्कर्ष में सहयोग एवं गौशाला का शिलान्यास

24 जनवरी को कन्या गुरुकुल महा विद्यालय देहरादून में यज्ञ के उपरान्त गुरुकुल परिसर में गौशाला के नव निर्माण हेतु शिला न्यास का कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर श्री धर्मपाल आर्य जी ने आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से घोषित सहयोग राशि का चैक प्रदान किया।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, उपमन्त्री श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता, श्री आशीष आर्य, श्रीमती वीणा आर्या, सहायक अधिष्ठाता श्री जय प्रकाश विद्यालंकार एवं अन्य अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

अमृत्र पुत्र मानव

(श्रृणवन्त विश्वेऽमृतस्य पुत्रः)

हे मृत्युंजय, हे अमुतपुत्र, हे काल कूटपायी धरती के राजकुँवर ।
तू दीन हीन, बौना बन कर है विचार रहा क्यों, धरती पर?

तू तेज पुंज का पुत्र, भुवन में अग्नि ताड़ित का अट्टहास।
तू अमृत बाँटता रहा, धरा पर भरता आया मधु प्रकाश।।

तू है प्रवास में किन्तु वास है तेरे हित ही हर निकेत ।
तू हिम बनकर जमा, बहा बन नीर, ढहा बन रेत-रेत।।

तू ही विराट से छूट, टूट हो रहा धरा पर क्षार-क्षार।
तू ही धारा में फंसा, हुआ तू धारा पार है ज्योति ज्वार।।

तू अपने से अनजान, संभल, क्यों आत्म रुप को रहा भूल ?
तू ब्रह्मा, विष्णु महेश, रुद्र का रुप मिलता रहा धूल।।

तू बन्ध-मोक्ष की गाँठ खोलता रहा, सदा ही मुक्त प्राण ।
तू देव-दिव्यता का विकास क्रम लिये मनुजता मूर्तिमान।।

तू सृजक सतत पालक पोषक के, अन्तहित तुझ में नाश त्रास।
तू रजस तमस में ग्रसित जीव, तू सच्चिदानन्द का मधु प्रकाश।।

तू कला कुशल तू कर्णधार, तू महा सृजन का शुभ शृंगार।
उसकी धरती को स्वर्ग बना, उसकी महिमा का कर प्रसार।।

वह प्यार प्राप्त कर के जिससे मानव होवे उद्धार।
इन्द्रियजित जीवन जिये , मनुष्य आदर्श पुरुषवत निर्विकार ।।

- लखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र', भोजपुरा, मैनपुरी-205001 (उ.प्र.)

आर्यसमाज अम्बिका विहार में मकर संक्रान्ति पर्व मनाया गया

वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली के तत्त्वधान में आर्य समाज अम्बिका विहार में मकर संक्रान्ति पर्व 19 जनवरी 2014 को प्रात: 10 से 1 बजे तक बड़े धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली के अधिष्ठाता आचार्य इन्द्रदेव जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। तदुपरान्त आर्य महिलाओं ने भजन एवं श्री चन्द्रशेखर शर्मा ने पर्व की वैदिक

परम्परा एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उजागर करते हुए जन समूह को महर्षि दयानन्द का उद्घोष 'वेदों की ओर लौटो' के महत्त्व का वर्णन किया।

डा. राम गोपाल जी शर्मा ने वेद और दूसरे भारतीय आर्ष ग्रन्थों का वर्णन करते हुए पर्व के महत्व एवं वर्तमान सामाजिक ज्वलन्त समस्याओं को देखते हुए परिवारों में बच्चों में नैतिक एवं अच्छे संस्कार देने में माता-पिता के योगदान पर बल दिया। कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, के साथ-साथ वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली के प्रधान श्री रवि चड्ढ़ा, कार्यकारी प्रधान श्री वीरेन्द्र सरदाना, महामन्त्री श्री राजेन्द्र लाम्बा, संरक्षक श्री मदन मोहन सलूजा एवं श्री विक्रम नरूला, प्रचार मन्त्री श्री सुरेन्द्र कोछड़, ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। पश्चिमी दिल्ली की अनेक आर्यसमाजों-पश्चिम विहार, सुन्दर विहार, भैंरा इन्कलेव, कीर्ति नगर, तिलक नगर, विकासपुरी बाहरी रिंग रोड़, विकासपुरी डी-ब्लॉक, पूर्वी पंजाबी बाग, न्यू मुलतान नगर, पश्चिम पुरी, 'ए' ब्लाक जनकपुरी, के अधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित थे। अम्बिका कॉ- आपरेटिव हाऊसिंग सोसाइटी के प्रधान श्री अरुण सिन्हा एवं श्री सनातन धर्म मन्दिर सभा के प्रधान श्री प्रेमदत्त भाटिया एवं वरिष्ठ नागरिक एसोसियेशन के उप-प्रधान श्री महेन्द्र प्रताप शर्मा, व हमारे कुछ सिक्ख भाइयों ने भी समारोह को सफल बनाने में सहयोग दिया। अन्त में आर्यसमाज अम्बिका विहार के प्रधान उपेन्द्र नाथ तलवार ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने हेतु, सभी महानुभावों तथा आगन्तुकों का उपस्थित होकर उत्साहित करने एवं कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए हार्दिक धन्यवाद व आभार व्यक्त किया। वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री रवि चड्ढा ने सभी उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद करते हुए आर्य समाज अम्बिका विहार के अधिकारियों को इस प्रयास की सफलता पर बधाई देते हुए वेद प्रचार के कार्य में सक्रिय होने का सुझाव दिया।

श्री शिवनारायण सम्मानित

कोटा के आर्य विद्वान आर्य समाज रामपूरा कोटा के प्रधान श्री शिव नारायण उपाध्याय को उड़ीसा में गुरूकुल हरीपुरा नुवापाड़ा में आचार्य श्री सुदर्शन जी द्वारा सम्मानित किया गया। उड़ीसा में हरीपुरा गुरूकुल के तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर कोटा से सात सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल श्री राजेन्द्र आर्य के नेतृत्व में उड़ीसा गया था। इस अवसर पर आयोजित आर्य महा सम्मेलन में श्री शिवनारायण जी ने अपना भाषण हिन्दी में दिया जिसका उड़िया अनुवाद आचार्य सुदर्शन जी ने किया गया। श्री शिवनारायण उपाध्याय जी को इस अवसर पर सम्मान राशि, शाल एवं श्रीफल भेंट कर सम्मानित करते हुए 'लेखवीर' की उपाधि से विभूषित किया गया।

- डी. पी. मिश्रा, मन्त्री, आ.स.

आर्यसमाज विकास नगर, उत्तम नगर का

प्रथम वार्षिकोत्सव

रविवार 2 फरवरी, 2014

यज्ञ-भजन-प्रवचन : सायं 3 बजे से

स्थान : डी.डी.ए. पार्क, हस्तसाल, शिव विहार

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें। मार्ग सम्बन्धी जानकरी के लिए संयोजक श्री सुखबीर सिंह आर्य (9350502175) से सम्पर्क करें।- ***दयानन्द त्यागी, प्रधान***

योग-ध्यान साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक 7 से 14 अप्रैल 2014 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाएंगे तथा दर्शन-पठन-पाठन की भी व्यवस्था है। साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी पा सकेंगे। आश्रम में पूज्य महात्माजी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे है अत: इच्छुक साधक विस्तृत जानकारी व अपना स्थान आरक्षित करने के लिये मो. 08419107788, 09419796949 अथवा 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

-भारत भूषण आनन्द, प्रधान

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के लिए आवश्यक सूचना

आचार्य ऋषिदेव सहायक वेद प्रचार अधिष्ठाता नियुक्त

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं को जनकार हर्ष होगा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वेद प्रचार विभाग अधिष्ठाता आचार्य खुशीराम जी के नेतृत्व में कार्य कर रहा है। इस विभाग कार्यों को और अधिक

साप्ताहिक सत्संगों की उपस्थिति में वृद्धि करना मुख्य लक्ष्य होगा वेद प्रचार विभाग का

विस्तृत करने के लिए सहायक वेद प्रचार अधिष्ठाता के रूप में आचार्य ऋषिदेव जी को नियुक्त किया गया है। आचार्य ऋषिदेव जी दिल्ली स्थित समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों को सम्पर्क करके साप्ताहिक सत्संग, उपस्थिति, आने वाले उपदेशक, भजनोपदेशक आदि के विषय में जानकारियां एकत्र कर रहे हैं, जिससे उनकी आवश्यकता एवं व्यवस्था के अनुसार आर्यसमाजों में प्रति सप्ताह सभा की ओर से उपदेशक व भजनोपदेशकों को भेजा जा सके। आपसे निवेदन है कि आप मांगी गई सूचनाएं उपलब्ध कराने का कष्ट करें। - **महामन्त्री**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.) में

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पाद उपलब्ध

1. आंवला कैडी 500 ग्राम	160/-	9. सफेद सुरमा 1/2 ग्राम	32/-
(सूखा मुरब्बा) 1 किलो	286/-	10. महाभृंगराज तेल 250ग्राम	206/-
2. च्यवनप्राश स्पेशल 1 किलो	294/-	11. आंवला रस 1 लीटर	154/-
3. गुरुकुल चाय 400 ग्राम	201/-	12. मधुमेहनाशिनी 50 ग्रा.	259/-
4. गुरुकुल चाय 200 ग्राम	111/-	**सभी उपलब्ध उत्पादों पर 10% की**	
5. गुरुकुल चाय 100 ग्राम	61/-	**आकर्षक छूट। प्राप्त करने/अधिक**	
6. गुलकन्द 250 ग्राम	114/-	**जानकारी के लिए 9540040339 पर**	
7. पायोकिल मंजन 60 ग्राम	88/-	**श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।**	
8. पायोकिल मंजन 25 ग्राम	42/-		

- महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का

वैदिक प्रकाशन विभाग

प्रकाशित वैदिक साहित्य पर भारी छूट

अनु.	साहित्य	मूल्य
1.	सत्यार्थ प्रकाश 18 भाषाओं में (सीडी)	30/-
2.	महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण ग्रन्थ (सीडी)	30/-
3.	शेख चिल्ली और लाल बुजक्कड (सीडी)	30/-
4.	पारिवारिक सुखशान्ति एवं समृद्धि के लिये यज्ञ करें (सीडी)	30/-
5.	गुरुदेव दयानन्द (सीडी)	30/-
6.	सत्य की राह (सीडी)	30/-
7.	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (5 सी.डी. सैट)	100 /-
8.	वैदिक विनय	150/-
9.	गुरुदत्त विद्यार्थी - हिन्दी / अंग्रेजी	80/-
10.	दयानन्द लघुग्रंथ सग्रंह	70/-
11.	उपनिषदों की कहानियाँ	60/-
12.	शगुन लिफाफा सिक्केवाला	400 /- सैंकड़ा
13.	शगुन लिफाफा बिना सिक्केवाला	300 /- सैंकड़ा
13.	नैतिक शिक्षा एवं व्यवहार कुशलता	200/-
14.	नेम स्लिप (1×21)	10/-
15.	समस्त कॉमिक्स	25 से 35/-
16.	अनुपम दिनचर्या एवं गीताञ्जलि	50/-
17.	वेद भाष्य (घूड़मल प्रकाशन)	5000/-
18.	दयानन्द ग्रन्थ परिचय	30/-
19.	सत्यार्थ प्रकाश (अजिल्द)	40/-
	सत्यार्थ प्रकाश (सजिल्द)	80/-
	सत्यार्थ प्रकाश (स्थूलाक्षर)	150/-

सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य पर 20 % छूट।

अन्य प्रकाशनों के साहित्य पर 10% की छूट।

आन्तरिक कमजोरियों को दूर करता है यज्ञ: आचार्य बालकृष्ण

पतंजलि योगपीठ के महामंत्री आचार्य बालकृष्ण ने कहा है कि यज्ञ आन्तरिक कमजोरियों को दूर कर पवित्रता को बढ़ाता है। मानव अन्त:करण शुद्ध होने से ईश्वर की निकटता प्राप्त करता है।

आर्य समाज, बी.एच.ई.एल. में आर्य उप प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, ज्वालापुर तथा भेल के संयुक्त तत्वावधान में 'मंकर सौर संक्राति'' के पावन अवसर पर आयोजित 51 कुण्डीय राष्ट्र कल्याण चतुर्वेद शतक महायज्ञ में बतौर मुख्य अतिथि उन्होंने कहा कि यह पर्व मानव जीवन और वनस्पति दोनों के लिए उत्प्रेरक है। इससे नवचेतना का संचार होता है। उत्तरायण वृद्धि और गति का परिचायक है। इसमें तिल, तेल और तूल का महत्व होता है। उन्होंने आगे कहा कि जो ईश्वर का उपासक होता है, वह विपत्ति आने पर अपने कर्त्तव्य पथ से विचलित नहीं होता। महर्षि दयानन्द ने चुनौतियों का सामना करते हुए पाखण्ड और अन्धविश्वास के खिलाफ आवाज उठायी, आचार्य ने कहा कि हमें दृढ़ प्रतिज्ञ होकर बुराइयों से अच्छाइयों की ओर जाना चाहिए।

इससे पूर्व उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. महावीर अग्रवाल ने 51 कुण्डीय महायज्ञ सम्पन्न कराया। इसके मुख्य यजमान ज्ञानेश अग्रवाल और उनकी धर्मपत्नी थी। आर्ष कन्या गुरुकुल, चोटीपुरा की ब्रह्मचारिणीयों ने वेद पाठ किया और भजन सुनाएं।

प्रो. महावीर अग्रवाल ने इस अवसर पर कहा कि यज्ञ हमें देवत्व की ओर ले जाता है। जीवन को सन्तुलित कर उसमें माधुर्य भरता है और सकारात्मक सोच बनाता है। इनके अतिरिक्त प्रान्तीय प्रधान हजारीलाल, देवराज आर्य, प्रवीण आर्य, डा. योगेश शास्त्री, अशोक माणिक टाला, विजयपाल सिंह, प्रेमलता आर्या, विधायक आदेश चौहान, पूर्व विधायक रणजीत सिंह वर्मा, पूर्व प्रान्तीय मंत्री ज्ञानचन्द्र गुप्त ने भी अपनी शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम का संचालन डा. योगेश शास्त्री ने किया।

– देवराज आर्य, छाया प्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड

प्रवेश सूचना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से आर्यसमाज आनन्द विहार, एल ब्लाक, हरि नगर, नई दिल्ली-64 में संचालित गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् (लघुगुरुकुल) में शिशु क्रीडाशाला (नर्सरी) से सर्वविद्या निष्णात होने तक (आर्ष पाठ्यक्रम के अनुसार) संस्कृत माध्यम से संस्कृत सम्भाषण से वेद तक, संस्कृत गणित, संस्कृत विज्ञान, संस्कृत भूगोल, संस्कृत संगणक, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धववेद, स्थापत्य वेद, वेदांग, प्रतिशाख्य, सर्वशाखा। संस्कृत माध्यम से हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाएं। आत्मा की शुद्धि के लिए सन्ध्या एवं अग्निहोत्र।

नि:शुल्क पौष्टिक भोजन एवं आवास व्यवस्था के साथ-साथ प्रत्येक ब्रह्मचारी को 18 वर्ष की आयुपर्यन्त 1000/- रुपये मासिक छात्रवृति के रूप में बैंक खातों में जमा की जाएगी। जो माता-पिता अपनी सन्तानों को संस्कृत, संस्कृति एवं संस्कार की पूर्ण शिक्षा दिलाना चाहते हों वे तत्काल सम्पर्क करें -

- आचार्य धनञ्जय शास्त्री, आचार्य (9650183330)
Email:aryasabha@yahoo.com

आर्यसमाज श्रीगंगानगर (राज.) में चतुर्वेद शतक यज्ञ व वेद प्रचार

27 फरवरी से 2 मार्च, 2014
यज्ञ : प्रात: 7:30 से 10 बजे
ब्रह्मा/उपदेश : आचार्य महावीर मुमुक्षु
भजन : श्रीमती सुदेश आर्या

- रवि प्रकाश वर्मा, मन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार का वार्षिकोत्सव समारोह

11-12-13 अप्रैल, 2014

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से वार्षिकोत्सव हेतु बस याया आयोजित की जाएगी। दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपना कोई कार्यक्रम इन तिथियों में न रखें जिससे आप भी इस समारोह में भाग ले सकें।

- विनय आर्य, महामन्त्री

आर्यवीर दल शाखा रानी बाग द्वारा एक शाम शहीदो के नाम - मंगल मिलन एवं युवा उत्सव

6 अप्रैल, 2014 सायं 4 बजे

स्थान : स्वामी श्रद्धानन्द पार्क, ऋषि नगर, रानी बाग, दिल्ली-34

- वीरेन्द्र आर्य, संयोजक

वेद प्रचार मंडल उत्तर पश्चिमी दिल्ली के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव पर

विशाल शोभायात्रा

रविवार दिनांक 23 फरवरी, 2014

यज्ञ : प्रात: 10 बजे **यज्ञ स्थल :** आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली
शोभा यात्रा प्रारम्भ : प्रात: 11 बजे

गुरुवर विरजानन्द जी के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने एवं प्रचार-प्रसार व जन जागृतिके लिए इस शोभायात्रा में भाग लेकर पुण्यलाभ अर्जित करें

-: निवेदक:-

सुरेन्द्र आर्य	जोगेन्द्र खट्टर	वीरेन्द्र आर्य
प्रधान	महामन्त्री	संयोजक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 आवश्यकता है

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की शिरोमणि नियन्त्रक संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) निम्न लिखित पदों के लिए आवेदन आमन्त्रित करती है-

1. **प्रबन्धक (लीगल):** जो सभा के सम्पत्ति एवं कोर्ट सम्बन्धी कार्यों को कर सके।
2. **उपदेशक/प्रचारक/भजनोपदेशक :** जो सभा के वेद प्रचार विभाग/प्रचार वाहन पर कार्य कर सकें।
3. **सेल्समैन:** जो विभिन्न स्थानों पर जाकर वैदिक साहित्य के आर्डर ला सके/विक्रय कर सके तथा पुस्तक मेलों में भी जाकर साहित्य प्रचार कार्य को सम्पन्न कर सके।
4. **हिन्दी टाईपिस्ट/अशुलिपिक :** जो हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी कार्य कर सकें।
5. **एकाउंटेंट :** पूर्ण अनुभवी हों।
6. **ड्राइवर :** कमर्शियल लाइसेंस एवं बैज वालों को वरियता।
7. **ग्राफिक डिजाइनर :** हिन्दी एवं अंग्रेजी का ज्ञान अनिवार्य।

सभी पदों के लिए अनुभवी योग्य उम्मीदवारों की आवश्यकता है। योग्यता के अनुसार वेतन सहित अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को वरीयता दी जाएगी। इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा भेजें।

Email:aryasabha@yahoo.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का नया प्रचार वाहन सेवारत

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एक नया प्रचार वाहन इको-कार्गो की व्यवस्था की गई है। यह प्रचार वाहन दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र तथा आस-पास के क्षेत्रों में वेद प्रचार के कार्य के साथ-साथ आर्यसमाजों को हवन सामग्री तथा वैदिक साहित्य पहुंचाएगा।

दिल्ली एवं आस-पास के समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं सहायक संगठनों से निवेदन है कि वे इस प्रचार वाहन की सेवाएं लें। यदि आप अपने वार्षिकोत्सव, स्थापना दिवस या अन्य किसी उत्सव के अवसर पर वैदिक साहित्य के प्रचारार्थ स्टाल लगवाना चाहें तो भी इसकी सेवाएं श्री विजय आर्य (9540040339) पर सम्पर्क करके प्राप्त कर सकते हैं।- *विनय आर्य, महामन्त्री*

शोक समाचार

प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. सुरेन्द्र कुमार का निधन

आर्य जगत् के प्रसिद्ध चिकित्सक और समाजसेवी डॉ. सुरेन्द्र कुमार का 9 जनवरी 2014 को अपने निवास इलाहाबाद, उ.प्र. में निधन हो गया। वे 73 वर्ष के थे। अन्तिम संस्कार 11 जनवरी को हुआ। शान्ति यज्ञ 13 जनवरी को चिलौडा ग्राम में सम्पन्न हुआ। वे अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी एवं दो सुपुत्रों का भरापूरा छोड़ गए हैं। डॉ. साहब के निधन से इलाहाबाद ही नहीं आसपास के जनपदों में शोक की लहर छा गई।

डॉ. कुमार अपने पांचों भाइयों में सबसे बड़े थे। अब भी परिवार में डॉ. नरेन्द्र कुमार, डॉ. देवेन्द्र कुमार, श्री धीरेन्द्र कुमार अधिवक्ता, और डॉ. राजेन्द्र कुमार अपने पिता के बताये हुए रास्ते पर चलकर आर्य समाज और वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। डॉ. कुमार साहब आर्य जगत् के प्रसिद्ध समाजसेवी और चिकित्सक स्व डॉ. धर्मदास वर्मा के ज्येष्ठ सुपुत्र थे। ज्ञातव्य है डॉ. धर्मदास वर्मा ने अपने जीवनकाल में 25 से अधिक आर्यसमाजों की स्थापना की और आर्य समाज का प्रचार-प्रसार दूर-दूर तक अपने ही साधनों से किया करते थे।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार अपने पिता स्व. डॉ. धर्मदास वर्मा की मृत्यु के बाद वर्षों तक स्वयं आर्य समाज का प्रचार-प्रसार अपने साधनों से ही किया करते थे। डाक्टर साहब अपने कर्मक्षेत्र ग्राम चिलौडा और सहसों, फूलपुर, इलाहाबाद में एक कर्मवादी सच्चे आर्य की तरह जनता की सेवा चिकित्सा के द्वारा किया करते थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-2
एम ब्लाक, रोड नं. 1, नई दिल्ली

प्रधान : श्री प्रियव्रत
मन्त्री : श्री सहदेव नांगिया
कोषाध्यक्ष : श्री एस. के. कोहली

आर्यसमाज भीमगंज मंडी
कोटा जं. (राजस्थान)

प्रधान : श्री सूरजमल त्यागी
मन्त्री : श्री ओमदत्त गुप्ता
कोषाध्यक्ष : श्री अजय सूद

स्वाध्याय के लिए पढ़ें
वैदिक विनय
मात्र 125/- रुपये

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 27 जनवरी, 2014 से रविवार 2 फरवरी, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 30/31 जनवरी, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29 जनवरी, 2014

केरल के कालीकट में सम्पन्न विराट यज्ञ समारोह का एक दृश्य

प्रतिष्ठा में,

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)

अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध

प्राप्ति स्थान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर 25000 लोगों तक सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने में आर्यजन सहयोगी बनें

यह पुस्तक मेला वैदिक साहित्य प्रचार की दृष्टि से एक ऐसा मंच होता है जहां हर रोज ऐसे व्यक्ति जो आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा वैदिक साहित्य से अनजान होता है या बहुत कम जानकारी रखते हैं। उस प्रत्येक व्यक्ति तक इन सबकी जानकारी पहुंचाना ही हमारा उद्देश्य होता है। इसी उद्देश्य पूर्ति हेतु सभा ने आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से पहली बार **छह स्टाल हिन्दी साहित्य तथा एक स्टाल अंग्रेजी साहित्य के लिए** बुक कराया है तथा कम से कम 25000 लोगों तक सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10/– रुपये में पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। जबकि सत्यार्थ प्रकाश का न्यूनतम मूल्य 50/– रुपये है। आर्ष सहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से 20/– प्रति पुस्तक का सहयोग दिया गया है। शेष 20/–रुपये का हम आपसे सहयोग चाहते हैं। इससे पहले के पुस्तक मेलों में कुरान और बाइबिल की लाखों प्रतियां नि:शुल्क वितरित की जा रही हैं, यह हम सबके लिए चिन्तन का विषय है। अत: आर्यसमाजें, शिक्षण संस्थान एवं दानी सज्जनों से अनुरोध है कि 20/– रुपये प्रति पुस्तक की दर से 100, 200, 500, 1000 सत्यार्थ प्रकाश हेतु सहयोग राशि प्रदान करें। कृपया सहयोग राशि भी का चैक **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम भेजें – विनय आर्य, महामन्त्री**

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर